समाजशास्त्र विभाग, समाज विज्ञान विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

द्वारा आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समाज, स्वच्छता एवं सतत् विकास लक्ष्य: एक समाजशास्त्रीय चिंतन

स्थान- सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत बहुउद्देशीय सभागार, उ०मु०वि०वि०, हल्द्वानी

दिनांक- 17 एवं 18 मार्च 2026

संरक्षक एवं अध्यक्ष
प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी
मा. कुलपति, उ. मु.वि.वि, हल्द्वानी

मुख्य अतिथि
प्रो. जे.पी. पचौरी
पूर्व कुलपति स्पर्श हिमालय
विश्वविद्यालय, देहरादून

मुख्य वक्ता
प्रो. जे.एस. पुण्डीर
पूर्व प्रति कुलपति
सी.सी.एस. विश्वविद्यालय, मेरठ

विशिष्ट वक्ता
प्रो. नील रतन
नेशनल कोऑर्डिनेटर, सोशियोलॉजी ऑफ़ सैनिटेशन,
सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विसेज़, नई दिल्ली

विशिष्ट वक्ता
प्रो. इन्दु पाठक
पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र
डी.एस.बी. परिसर, कु.वि.वि., नैनीताल

विशिष्ट वक्ता
प्रो. अनिल वघेला
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र
भावनगर विश्वविद्यालय, गुजरात

संयोजक
प्रो. रेनू प्रकाश
निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा
एवं समन्वयक, समाजशास्त्र
उ.मु.वि.वि, हल्द्वानी

कार्यक्रम सचिव

डॉ. भावना डोभाल, डॉ. गोपाल सिंह गौनिया,
श्रीमती शैलजा, डॉ. किशोर कुमार

कार्यक्रम सचिव

डॉ. सीता
डॉ. नागेंद्र गंगोला
डॉ. नमिता वर्मा
डॉ. द्विजेश उपध्याय
डॉ. नीरज जोशी
श्री विकास जोशी
सुश्री ऋतंभरा नैनवाल

कार्यक्रम सह-सचिव

डॉ. नीरजा सिंह
डॉ. शालिनी चौधरी
श्री सिद्धार्थ पोखरियाल
डॉ. घनश्याम जोशी
डॉ. कल्पना लखेड़ा
डॉ. देबकी सिरौला
डॉ. रंजू जोशी पाण्डे
डॉ. मनीषा पंत
डॉ. दिनेश चन्द्र काण्डपाल
डॉ. जगमोहन परगाईं
श्रीमती भावना धौनी
डॉ. विनय सिंह रावत
श्री तरुण नेगी
श्री दिग्विजय पथनी
श्री हिमांशु पुनेठा
डॉ. बबीता खाती
डॉ. मोहन सम्मल
श्री सुनील तिवारी
मो. जिलानी
डॉ. धीरज पंत
श्रीमती प्रियंका सिंह
डॉ. सुरेश सिंह मेहता
डॉ. अंजना देवी

आयोजक समिति

डॉ. दीपिका वर्मा
डॉ. जीतेश जोशी
श्री रोहित कुमार
डॉ. संपत्ति
श्रीमती कुशा सिंह
डॉ. नियति रावत
डॉ. पूजा हैड़िया
डॉ. लता जोशी
डॉ. ललित मोहन पंत
श्री हिमांशु पुनेठा
श्रीमती दीपिका रैक्वाल
सुश्री रेनु भट्ट
ज्योति शर्मा
श्री नवीन जोशी

मंच साज-सज्जा एवं द्वीप प्रज्वलन समिति

डॉ. दीपिका वर्मा
डॉ. मनीषा पंत
श्रीमती दीपिका रैक्वाल
ज्योति शर्मा
सुश्री रेनु भट्ट

स्वागत समिति

डॉ. नमिता वर्मा
श्रीमती भावना धौनी
डॉ. संपत्ति
सुश्री रेनु भट्ट
ज्योति शर्मा

सूक्ष्म जलपान समिति

डॉ. घनश्याम जोशी
श्री सुनील तिवारी
डॉ. नियति रावत
डॉ. धीरज पंत
श्री नवीन जोशी

पंजीकरण समिति

श्रीमती कुशा सिंह
डॉ. जगमोहन परगाईं
डॉ. मोहन सम्मल
डॉ. पूजा हैड़िया

रिपोर्ट लेखन समिति

डॉ. नीरज जोशी
डॉ. लता जोशी
श्री हिमांशु पुनेठा

ICT समिति

श्री राजेश आर्या
श्री मोहित रावत
श्री विभु कांडपाल

सांस्कृतिक समिति

श्री प्रदीप कुमार
डॉ. द्विजेश उपाध्याय
डॉ. जगमोहन परगाईं
डॉ. अशोक टम्टा
डॉ. प्रकाश आर्या

भोजन व्यवस्था समिति

डॉ. द्विजेश उपध्याय
डॉ. नीरज जोशी
डॉ. जगमोहन परगाईं
डॉ. ललित मोहन पंत
डॉ. नियति रावत
डॉ. विनय सिंह रावत
डॉ. दिनेश चन्द्र काण्डपाल
डॉ. सुरेश सिंह मेहता
श्री तरुण नेगी

यात्रा भत्ता समिति

श्री दिग्विजय पथनी
श्री रोहित कुमार
श्री दिनेश कुमार

आवास व्यवस्था समिति

श्री आशीष टम्टा
श्री विकास जोशी
सुश्री ऋतंभरा नैनवाल
श्री जीतेश जोशी

सलाहकार एवं विशेषज्ञ समिति

प्रो. जे. एस. पुंडीर
प्रो. जे. पी. पचौरी
प्रो. आलोक कुमार
प्रो. कृष्ण कांत शर्मा
प्रो. अतवीर सिंह
प्रो. सतीश शर्मा
प्रो. बी. के. नागला
प्रो. नील रतन
प्रो. अनिल बघेला
प्रो. आराधना शुक्ला
प्रो. डी. एस. बिष्ट
प्रो. इंदु पाठक
प्रो. इला साह
प्रो. ज्योति जोशी
प्रो. किरण ड़ंगवाल
प्रो. रवींद्र कुमार
प्रो. अर्चना श्रीवास्तव
प्रो. ए. पी. सिंह
प्रो. प्रमोद गुप्ता
प्रो. अनीता धुर्ये
प्रो. एम. पी. सिंह
प्रो. कमरुद्दीन
प्रो. प्रियंका रुवाली
प्रो. प्रेम प्रकाश
प्रो. संजय कुमार
डॉ. दीपक पालीवाल
डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी
प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे
प्रो. पी. डी. पंत
प्रो. जितेंद्र पाण्डे
प्रो. एम. एम. जोशी
प्रो. डिगर सिंह फर्सवाण
प्रो. गगन सिंह
प्रो. मंजरी अग्रवाल
प्रो. राकेश चंद्र रयाल
प्रो. आशुतोष कुमार भट्ट
प्रो. पी. के. सहगल
प्रो. अरविंद भट्ट
प्रो. कमल देवलाल
डॉ. अमिता प्रकाश
डॉ. नरेन्द्र कुमार सिजवाली
डॉ. उर्वशी पाण्डे
डॉ. ममता पंत
डॉ. प्रज्ञा वर्मा
डॉ. मंजु पनेरु
डॉ. स्निग्धा रावत
डॉ. अरूणिमा पाण्डे
डॉ. पुष्पा भट्ट
डॉ. कुसुमलता
डॉ. पुष्पा वर्मा
डॉ. योगेश मैनाली
डॉ. ललित जोशी

विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की स्थापना 31 अक्टूबर 2005 को उत्तराखण्ड विधानसभा के अधिनियम द्वारा की गई थी। यह विश्वविद्यालय राज्य का एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय है, जिसका उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाना है। पारंपरिक विश्वविद्यालयों से पढ़ाई करने में असमर्थ शिक्षार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, गृहिणियों, ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं और उन शिक्षा से वंचितव्यक्ति के लिए यह संस्थान शिक्षा का एक सशक्त माध्यम है, विश्वविद्यालय का मुख्यालय हल्द्वानी (जिला नैनीताल) में स्थित है और यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) तथा दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो (DEB) से मान्यता प्राप्त है।

इस विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी विशेषता इसकी लचीली शिक्षा प्रणाली है। यहाँ पर शिक्षार्थी अपनी सुविधा के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। पाठ्यक्रमों में स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र और व्यावसायिक कार्यक्रम शामिल हैं। शिक्षा का माध्यम मुख्यतः अध्ययन सामग्री, ऑनलाइन संसाधन, ऑडियो-वीडियो लेक्चर और संपर्क कार्यक्रमों के जरिए होता है। विश्वविद्यालय ने राज्यभर में अनेक अध्ययन केन्द्र स्थापित किए हैं,ताकि शिक्षार्थियों को स्थानीय स्तर पर मार्गदर्शन और सहायता मिल सके।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का उद्देश्य शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करना है, अर्थात शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाना। यह विश्वविद्यालय विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपयोगी है जो आर्थिक, सामाजिक या भौगोलिक कारणों से नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। विश्वविद्यालय ने डिजिटल शिक्षा को भी अपनाया है और शिक्षार्थियों को ऑनलाइन प्रवेश, परीक्षा, असाइनमेंट जमा करने और अध्ययन सामग्री प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने सामुदायिक रेडियो स्टेशन "हैलो हल्द्वानी" भी स्थापित किया है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, संस्कृति और सामाजिक मुद्दों से संबंधित कार्यक्रम प्रसारित करता है। यह पहल न केवल शिक्षार्थियों बल्कि स्थानीय समुदाय को भी लाभान्वित करती है। विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण केवल डिग्री प्रदान करना नहीं है, बल्कि समाज में शिक्षा के महत्व को बढ़ाना और लोगों को ज्ञान के माध्यम से सशक्त बनाना है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का योगदान राज्य के शैक्षिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह संस्थान शिक्षा को सुलभ, लचीला और गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। यहाँ पर शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम है। इस विश्वविद्यालय ने हजारों शिक्षार्थियों को शिक्षा का अवसर प्रदान किया है और उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित किया है।

संगोष्ठी की संकल्पना

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समाज, स्वच्छता एवं सतत विकास लक्ष्य (SDGs) परस्पर गहन रूप से जुड़े हुए ऐसे आयाम हैं, जो मानव सभ्यता के समग्र विकास को दिशा प्रदान करते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्य वर्ष 2030 तक सामाजिक समावेशन, आर्थिक समृद्धि तथा पर्यावरणीय संतुलन की स्थापना का एक वैश्विक प्रयास हैं। इन लक्ष्यों में स्वच्छ जल एवं स्वच्छता (SDG-6) को विशेष महत्व प्रदान किया गया है, क्योंकि स्वच्छता सामाजिक स्वास्थ्य, मानवीय गरिमा तथा सतत जीवनशैली की आधारशिला है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से स्वच्छता केवल व्यक्तिगत आदतों तक सीमित न होकर सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराओं, सामूहिक चेतना एवं संस्थागत व्यवस्थाओं से गहराई से संबंधित है। किसी भी समाज में स्वच्छता संबंधी व्यवहार सामाजिक मूल्यों, शिक्षा, आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक असमानताओं से प्रभावित होते हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों में स्वच्छता की समस्या सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, ग्रामीण-शहरी विभाजन तथा वंचित वर्गों की स्थिति से जुड़ी हुई है।

भारतीय समाज के संदर्भ में स्वच्छता एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विषय रहा है, जिसमें परंपरागत मान्यताओं एवं आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच निरंतर संवाद दिखाई देता है। स्वच्छ भारत अभियान जैसे प्रयासों ने सामाजिक सहभागिता एवं व्यवहार परिवर्तन को प्रोत्साहित किया है, जिससे स्वच्छता को जनआंदोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ है। स्वच्छता का संबंध केवल भौतिक स्वच्छ परिवेश से ही नहीं, बल्कि मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक चेतना से भी है। आंतरिक एवं बाह्य स्वच्छता का संतुलन ही सतत विकास की वास्तविक नींव रखता है। जब समाज स्वच्छता को सामूहिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक मूल्य के रूप में स्वीकार करता है, तभी सतत विकास लक्ष्यों की प्रभावी प्राप्ति संभव हो पाती है।

प्रस्तावित राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से समाज, स्वच्छता एवं सतत विकास के अंतर्संबंधों का बहुआयामी विश्लेषण कर, नीति-निर्माण, सामाजिक जागरूकता तथा वैश्विक सहयोग को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जाएगा।

उप शीर्षक:

1-समाज और स्वच्छता का आपसी संबंध
2-स्वच्छता, सामाजिक चेतना और व्यवहार परिवर्तन
3-ग्रामीण एवं शहरी समाज में स्वच्छता की आवश्यकताएँ
4-स्वच्छता और सतत् विकास
5-स्वच्छता एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य का संबंध
6-स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सतत् विकास
7-भारत में स्वच्छता से जुड़े सरकारी प्रयासों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन: नीति बनाम जमीनी हकीकत
8-स्वच्छता अभियानों में एनजीओ और स्थानीय संस्थाओं की भूमिका
9-सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में सामाजिक बाधाएँ
10-स्वच्छता: अधिकार या कर्तव्य : एक समाजशास्त्रीय बहस
11-सामुदायिक सहभागिता और स्वच्छता
12-स्वच्छता एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य: एक समाजशास्त्रीय संबंध
13-स्वच्छता अभियानों का समाज पर प्रभाव
14-सतत् विकास लद्धयों की प्राप्ति में स्वच्छता की भूमिका
15-स्वच्छ समाज से सतत् विकास तक : एक समाजशास्त्रीय निष्कर्ष
16-मीडिया अध्ययन : फिल्मों और साहित्यिक कृतियों में स्वच्छता का चित्रण
17-धार्मिक अनुष्ठानों में स्वच्छता की भूमिका : परंपरा और आधुनिकता

महत्वपूर्ण तिथियां

पंजीकरण की आंरम्भ तिथि- 8 फरवरी 2026
पंजीकरण की अंतिम तिथि- 10 मार्च 2026
शोध सारांश भेजने हेतु अंतिम तिथि- 25 फरवरी 2026
शोध पत्र भेजने हेतु अंतिम तिथि- 10 मार्च फरवरी 2026

नोट- इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध सारांश अधिकतम ३०० शब्द और सम्पूर्ण शोध आलेख (अधिकतम 4000 शब्द) यूनिकोड फॉन्ट/ times New Roman में टंकित कर dosseminar@uou.ac.in ईमेल पर भेज दें।

पंजीकरण शुल्क

ppr.02325.10082023.00073653@cnrb

Scan QR Code

शोधार्थियों हेतु-1000
संकाय सदस्यों हेतु-1500

ऑनलाईन पंजीकरण हेतु

Scan QR Code

link-

https://forms.gle/Aj4wPdJHk2He4WfU6

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- संयोजक-7302324006, कार्यक्रम सचिव- 9897803411, 8791625237, 7060487567